विश्व पुस्तक दिवस ▶ *पुस्तकों से हम प्यार और सादगी से जीना सीख सकते हैं*

'पुस्तकें, जिन्होंने रचा हमारा संसार' परिसंवाद का आयोजन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा विश्व पुस्तक दिवस पर 'पुस्तकें, जिन्होंने रचा हमारा संसार' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्वपूर्ण लोगों ने पुस्तकों के साथ अपने रिश्तों को पाठकों के साथ सा-हजया किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने गमछा और पुस्तकें भेंट कर सभी वक्ताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि पुस्तकें केवल ज्ञान नहीं ब-सजयाती बल्कि हमें विशेष बनाती है। किताबें माँ जैसी होती है जो हमें बेहतर नागरिक बनने की शिक्षा देती हैं। किताबों के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है और इस डिजिटल युग में उनका महत्त्व कम नहीं हुआ है। पहले वक्ता के रूप में बोलते हुए एडीशनल डिप्टी कंट्रोलर एंड आडिटर जनरल, सीएजी के.के. श्रीवास्तव ने कहा कि वे आधुनिक समाज के लिए दो लेखकों सिग्मंड फ्रायड और वल्दीवो निकोवोव की पुस्तकों को बेहद महत्त्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि इनके जरिये ही समाज में मानसिक रोगियों के इलाज के लिए बेहतर सम-हजय विकसित हो पाई। उन्होंने सिग्मंड फ्रायड की 1902 में प्रकाशित पुस्तक तथा निकोवोव की 2018 में

प्रकाशित पुस्तक की जानकारी पाठकों से सा-हजया करते हुए कहा कि इनसे हमारे सपनों को व्यवस्थित रूप से विश्लेषित करने की परंपरा शुरु हो पाई जो आगे चलकर मानसिक रोगो के इलाज में बेहद कारगर साबित हुई। प्रख्यात नाट्यकर्मी एम.के रैना ने बताया कि उन्होंने पहली पुस्तक अपने कॉलेज के पुस्तकालय में प-सजयी थी और वह अब्राहम लिंकन द्वारा लिखी गई थी। दूसरी पुस्तक जिससे वे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए वे गाँधी जी की आत्मकथा थी। उन्होंने कहा कि गाँधी मेरे रॉक स्टार थे और आज भी है। उन्होंने प्रेमचंद की कहानी कफन का जिक्र करते हुए कहा कि इन सबके जरिये ही मैं अपने समाज को वर्तमान से जोड़ पाता हूँ। इसी क्रम में उन्होंने ब्रतोल ब्रेख्त के नाटक और कविताओं तथा धर्मवीर भारती के कालजयी नाटक अंधायुग का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हम सब को साहित्य अवश्य प-सजयना चाहिए जिससे हम मानवीय जीवन को अलग तरीके से सम-हजय सकते हैं। प्रणव खुल्लर जो कि संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में संयुक्त सचिव है, ने वॉर एंड पीस, महाभारत आदि का जिक्र करते हुए कहा कि वे इन सबके साथ ब्रेख्त से भी प्रभावित हुए हैं। उन्होंने योगानंद की जीवनी पुस्तक का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि ये पुस्तक 1946 में प्रकाशित हुई थी और अभी तक 52 भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। ये है तो योगी की आत्मकथा लेकिन उसको इतने रोचक तरीके से लिखा गया है कि आप इसे उपन्यास की तरह प-सजयते हैं। यह पुस्तक आधुनिक संसार और आध्यात्मिक संसार के बीच एक सेतु का कार्य करती है। संयुक्त सचिव, नेटग्रिड, गृहमंत्रालय, भारत सरकार सतवंत अटवाल त्रिवेदी ने बचपन में रस्किन बॉंड और बाद में बुल्ले शाह का जिक्र करते हुए कहा कि किताबे हमें सोचने का मौका देती हैं।